

(१०)

मैं परम दिगम्बर साधु के गुण गाऊँ गाऊँ रे ।  
मैं शुध उपयोगी सन्तन को नित ध्याऊँ ध्याऊँ रे ।  
मैं पंच महाव्रत धारी को शिर नाऊँ नाऊँ रे ॥टेक ॥  
जो बीस आठ गुण धरते, मन-वचन-काय वश करते ।  
बाईस परीषह जीत जितेन्द्रिय ध्याऊँ ध्याऊँ रे ॥१ ॥  
जिन कनक-कामिनी त्यागी, मन ममता त्याग विरागी ।  
मैं स्वपर भेद-विज्ञानी से सुन पाऊँ पाऊँ रे ॥२ ॥  
कुंदकुंद प्रभुजी विचरते, तीर्थकर-सम आचरते ।  
ऐसे मुनि मार्ग प्रणेता को, मैं ध्याऊँ ध्याऊँ रे ॥३ ॥  
जो हित-मित वचन उचरते, धर्माभूत वर्षा करते ।  
'सौभाग्य' तरण-तारण पर बलि-बलि जाऊँ जाऊँ रे ॥४ ॥

(११)

नित उठ ध्याऊँ, गुण गाऊँ, परम दिगम्बर साधु ।  
महाव्रतधारी धारी...धारी महाव्रत धारी ॥टेक ॥  
राग-द्वेष नहीं लेश जिन्हों के मन में है..तन में है ।  
कनक-कामिनी मोह-काम नहीं तन में है..मन में है ॥  
परिग्रह रहित निरारम्भी, ज्ञानी वा ध्यानी तपसी ।  
नमो हितकारी...कारी, नमो हितकारी ॥१ ॥  
शीतकाल सरिता के तट पर, जो रहते..जो रहते ।  
ग्रीष्म ऋतु गिरिराज शिखर चढ़, अघ दहते...अघ दहते ॥  
तरु-तल रहकर वर्षा में, विचलित न होते लख भय ।  
वन अँधियारी...भारी, वन अँधियारी ॥२ ॥  
कंचन-काँच मसान-महल-सम, जिनके हैं...जिनके हैं ।  
अरि अपमान मान मित्र-सम, जिनके हैं..जिनके हैं ॥  
समदर्शी समता धारी, नग्न दिगम्बर मुनिवर ।  
भव जल तारी...तारी, भव जल तारी ॥३ ॥